पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन एवं बहुउद्देशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

शब्द
से संवेदना तक...
लेखन से
परिवर्तन तक...

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

‘समसामयिक प्रश्नों पर आपकी कलम’

(लेख प्रतियोगिता)

विचार...
चिंतन...
संवाद...
और
एक बेहतर
कल की ओर...

रचनाकार :-
धीरज सिंह

आयोजक:-
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी (म.प्र.)

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन एवं बहुददेशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

हिन्दी हमारी पहचान हमारी शक्ति

शब्द से संवेदन तक...
लेखन से परिवर्तन तक...

संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक : Webcoodee.com
मुख्य कार्यालय : 15 नेहरू चौक, वारासिवनी,
जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

Antrashabdshaktiprakashan

संपर्क : 9009423393
ईमेल : antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाइट : www.antrashabdshakti.com

वैधानिक सूचना

पुस्तक में प्रकाशित सभी रचनाएँ संबंधित रचनाकारों की मौलिक अभिव्यक्तियाँ हैं। प्रत्येक रचना में व्यक्त विचार, कथ्य एवं अभिमत के लिए संबंधित रचनाकार स्वयं उतरदायी हैं। रचनाओं के चयन एवं प्रकाशन का उद्देश्य साहित्यिक अभिव्यक्ति को मंच प्रदान करना एवं हिन्दी लेखन को प्रोत्साहित करना हैं।

हिन्दी से ही है पहचान...

विचार...
संवाद...
समाज...
और एक बैहतर कल...

पं.क्र.(04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

लेख प्रतियोगिता

लेखक/लेखिका - **धीरज सिंह**

तकनीक की चकाचौंध में कहीं खो न जाए इंसानियत

तकनीक की चकाचौंध में कहीं खो न जाए इंसानियत

मोबाइल की दुनिया, मानवीय मूल्यों और जीवन की सही दिशा की तलाश

कभी-कभी समय की सबसे बड़ी विडंबना यह होती है कि जिस साधन को मनुष्य अपनी सुविधा के लिए बनाता है, धीरे-धीरे वही साधन उसके जीवन की दिशा तय करने लगता है। आज मोबाइल हमारी हथेली में है, इंटरनेट हमारी उँगलियों पर है और पूरी दुनिया हमारी स्क्रीन के भीतर समाई हुई है। विज्ञान और तकनीक ने मानव जीवन को जिस गति और सुविधा से जोड़ा है, वह निश्चित रूप से अद्भुत है। ज्ञान के दरवाजे खुले हैं, संवाद की दूरियाँ मिट गई हैं और सीखने के अवसर पहले से कहीं अधिक व्यापक हुए हैं। लेकिन इसी चमक के बीच एक प्रश्न लगातार मन को उद्वेलित करता है—कहीं तकनीक की इस चकाचौंध में इंसानियत तो पीछे नहीं छूट रही? एक शिक्षक के रूप में बच्चों के बीच रहते हुए यह प्रश्न मेरे लिए केवल विचार का विषय नहीं, बल्कि प्रतिदिन दिखाई देने वाली वास्तविकता है। बच्चों के हाथ में मोबाइल है, आँखों के सामने स्क्रीन है, उँगलियाँ लगातार चल रही हैं, लेकिन कभी-कभी मन में यह चिंता भी उठती है कि कहीं उनकी जिज्ञासा, संवेदना, धैर्य और जीवन का उद्देश्य इस चमकदार आभासी दुनिया में धुंधला तो नहीं रहा। समस्या तकनीक नहीं है। तकनीक तो मानव बुद्धि की अद्भुत उपलब्धि है। समस्या तब जन्म लेती है, जब साधन साध्य बन जाता है, सुविधा आदत बन जाती है और तकनीक हमारे विवेक पर हावी होने लगती है। मोबाइल यदि किसी बच्चे को विज्ञान समझने में मदद करता है, किसी कठिन विषय को सरल बनाता है, नई भाषा सिखाता है, किसी पुस्तक तक पहुँचाता है या उसके भीतर नई खोज की जिज्ञासा पैदा करता है, तो वह वरदान है। लेकिन वही मोबाइल यदि बच्चे के अध्ययन का समय निगल जाए, उसकी नींद कम कर दे, उसे निरंतर मनोरंजन में उलझा दे, परिवार से संवाद कम कर दे और वास्तविक जीवन की गतिविधियाँ उसे नीरस लगने लगें, तो हमें सचेत होने की आवश्यकता है। इसलिए प्रश्न यह नहीं कि तकनीक का उपयोग होना चाहिए या नहीं; प्रश्न यह है कि तकनीक का उपयोग किस उद्देश्य से और किस सीमा तक होना चाहिए।

हमें अपने बच्चों को तकनीक से दूर नहीं करना है, बल्कि उन्हें तकनीक का स्वामी बनाना है, उसका गुलाम नहीं। आज के बच्चे एक ऐसी दुनिया में बड़े हो रहे हैं जहाँ जानकारी की कोई कमी नहीं है। एक क्लिक पर उत्तर मिल जाता है।

किसी विषय की जानकारी चाहिए तो इंटरनेट मौजूद है। किसी स्थान को देखना है तो वीडियो मौजूद है। किसी प्रश्न का उत्तर चाहिए तो कुछ सेकंड में स्क्रीन पर अनेक विकल्प सामने आ जाते हैं। लेकिन यहीं शिक्षा के सामने एक नई चुनौती खड़ी होती है। जानकारी और ज्ञान में अंतर है। उत्तर मिल जाना और उत्तर को समझ लेना एक बात नहीं है। शिक्षा का उद्देश्य बच्चे को हर प्रश्न का तैयार उत्तर देना नहीं, बल्कि उसे सही प्रश्न पूछना सिखाना है। विज्ञान की कक्षा में जब कोई बच्चा पूछता है—"ऐसा क्यों होता है?"—तो वहीं से वास्तविक शिक्षा शुरू होती है। जब वह किसी प्रयोग में गलती करता है, फिर सोचता है कि गलती कहाँ हुई और दोबारा प्रयास करता है, तब वह केवल विज्ञान नहीं सीख रहा होता, बल्कि जीवन जीने की कला सीख रहा होता है। मेरे लिए किसी बच्चे का यह कहना—"सर, मुझे समझ नहीं आया"—उसकी कमजोरी नहीं, बल्कि सीखने की शुरुआत है। मैं चाहता हूँ कि बच्चे उत्तर खोजने से पहले प्रश्न करना सीखें, जानकारी स्वीकार करने से पहले उसे परखना सीखें और किसी भी तकनीकी सुविधा का उपयोग अपने विवेक के साथ करें। आज की सबसे बड़ी चिंता केवल बच्चों का मोबाइल पर अधिक समय बिताना नहीं है। उससे भी बड़ी चिंता यह है कि कहीं वे धीरे-धीरे वास्तविक जीवन से कट न जाएँ। कभी बच्चे मैदान में खेलते थे, पेड़ों के नीचे बैठते थे, मिट्टी से खेलते थे, किताबों के पन्ने पलटते थे, अपने दादा-दादी की कहानियाँ सुनते थे और छोटी-छोटी चीजों में आनंद खोज लेते थे। आज वही अनुभव कई बार स्क्रीन के भीतर सिमटते जा रहे हैं। मैदान की जगह ऑनलाइन गेम ले रहा है, बातचीत की जगह चैट ले रही है और पुस्तक पढ़ने की जगह छोटे-छोटे वीडियो ध्यान आकर्षित कर रहे हैं। इससे सुविधा तो बढ़ी है, लेकिन धैर्य और एकाग्रता के सामने चुनौती भी बढ़ी है। वास्तविक जीवन हमें प्रतीक्षा करना सिखाता है।

एक पौधे को बड़ा होने में समय लगता है, परीक्षा की तैयारी में समय लगता है, किसी कला में निपुण होने में समय लगता है और एक अच्छे व्यक्तित्व के निर्माण में तो वर्षों लगते हैं। लेकिन डिजिटल दुनिया हमें तत्काल परिणामों की आदत डाल रही है। कुछ सेकंड में मनोरंजन, कुछ क्लिक में जानकारी और कुछ क्षणों में प्रतिक्रिया—यह आदत यदि अनियंत्रित हो जाए तो जीवन की स्वाभाविक गति हमें धीमी लगने लगती है। इसलिए बच्चों को तकनीक के साथ-साथ धैर्य भी सिखाना होगा। उन्हें यह समझाना होगा कि जीवन की सबसे सुंदर उपलब्धियाँ अक्सर धीरे-धीरे आकार लेती हैं। आज शिक्षा के सामने दूसरी बड़ी चुनौती है—मानवीय मूल्यों और संस्कारों की रक्षा। हम अपने बच्चों को स्मार्ट बनाना चाहते हैं, लेकिन क्या हम उन्हें संवेदनशील भी बना रहे हैं? हम चाहते हैं कि वे नई तकनीक सीखें, लेकिन क्या हम उन्हें यह भी सिखा रहे हैं कि किसी दुखी व्यक्ति का हाथ कैसे थामा जाता है? हम उन्हें प्रतियोगिता में आगे बढ़ना सिखाते हैं, लेकिन क्या हम उन्हें यह भी सिखाते हैं कि किसी पीछे रह गए साथी को आगे बढ़ाने के लिए हाथ कैसे बढ़ाया जाता है? हम उन्हें अधिकारों के बारे में बताते हैं, लेकिन क्या हम उन्हें कर्तव्यों का महत्व भी उतनी ही गंभीरता से समझाते हैं?

मनुष्य की पहचान केवल उसकी बुद्धि से नहीं होती। उसकी असली पहचान उसके व्यवहार, संवेदना, चरित्र और संस्कारों से होती है। एक बच्चा बहुत पढ़ा-लिखा हो सकता है, तकनीक में अत्यंत दक्ष हो सकता है, लेकिन यदि उसके भीतर माता-पिता के प्रति सम्मान, गुरु के प्रति श्रद्धा, प्रकृति के प्रति प्रेम और समाज के प्रति जिम्मेदारी नहीं है, तो हमारी शिक्षा कहीं न कहीं अधूरी रह गई है। संस्कार किसी मोबाइल ऐप की तरह डाउनलोड नहीं किए जा सकते। वे घर के वातावरण से आते हैं, परिवार के व्यवहार से आते हैं, शिक्षक के आचरण से आते हैं और समाज की संस्कृति से आते हैं। बच्चा वही अधिक सीखता है जो वह अपने आसपास देखता है। यदि घर में माता-पिता हर समय मोबाइल में व्यस्त हैं, तो बच्चे को केवल यह कहना कि "मोबाइल मत चलाओ" पर्याप्त नहीं होगा। यदि भोजन की मेज पर परिवार साथ बैठकर भी अलग-अलग स्क्रीन में व्यस्त है, तो संवाद की संस्कृति कैसे विकसित होगी? इसलिए बच्चों को डिजिटल अनुशासन सिखाने से पहले हमें अपने जीवन में उसका उदाहरण प्रस्तुत करना होगा। परिवार बच्चे की पहली पाठशाला है। बच्चे के व्यक्तित्व की पहली रेखाएँ घर में ही खिंचती हैं। परिवार में यदि बातचीत होगी, तो बच्चा संवाद करना सीखेगा। यदि घर में बुजुर्गों का सम्मान होगा, तो वह सम्मान सीखेगा। यदि माता-पिता जरूरतमंद की सहायता करेंगे, तो उसमें करुणा विकसित होगी। यदि परिवार प्रकृति के प्रति संवेदनशील होगा, तो बच्चा भी पर्यावरण को केवल किताब का विषय नहीं समझेगा। इसलिए हमें बच्चों को मोबाइल से बाहर की दुनिया से जोड़ना होगा। उन्हें मैदान में खेलने देना होगा, पौधे लगाने देना होगा, किताब पढ़ने देना होगा, चित्र बनाने देना होगा, प्रयोग करने देना होगा और परिवार के बुजुर्गों के अनुभव सुनने देना होगा। क्योंकि जीवन की अनेक महत्वपूर्ण शिक्षाएँ स्क्रीन से बाहर मिलती हैं। एक पौधा लगाकर उसकी देखभाल करना केवल पर्यावरण शिक्षा नहीं, जिम्मेदारी का पाठ भी है। किसी साथी की मदद करना केवल सामाजिक व्यवहार नहीं, मानवीय संवेदना का विकास भी है। किसी प्रयोग में असफल होकर दोबारा प्रयास करना केवल वैज्ञानिक प्रक्रिया नहीं, बल्कि धैर्य और संघर्ष का पाठ भी है। किसी बुजुर्ग की बात ध्यान से सुनना केवल शिष्टाचार नहीं, बल्कि अपनी जड़ों से जुड़ने का माध्यम भी है। यही वे अनुभव हैं जो बच्चे को भीतर से मजबूत बनाते हैं।

विद्यालय की भूमिका भी आज अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई है। विद्यालय केवल पाठ्यक्रम पूरा करने की जगह नहीं, बल्कि जीवन की तैयारी करने का स्थान है। शिक्षक का काम केवल विषय पढ़ाना नहीं, बल्कि बच्चे को सोचने, समझने और सही निर्णय लेने योग्य बनाना भी है।

विज्ञान पढ़ाते समय मेरा प्रयास रहता है कि बच्चे केवल पुस्तक के शब्दों को याद न करें, बल्कि प्रयोग करें, सवाल पूछें, आसपास की घटनाओं को देखें और स्वयं निष्कर्ष तक पहुँचें। जब बच्चा किसी वैज्ञानिक घटना को अपनी आँखों से देखता है, अपने हाथों से प्रयोग करता है और फिर उसके पीछे का कारण खोजता है, तो उसके भीतर ज्ञान के साथ जिज्ञासा भी जन्म लेती है। यही जिज्ञासा आगे चलकर उसे जीवन में सीखते रहने की प्रेरणा देती है। आज तकनीक के कारण तैयार उत्तर बहुत आसानी से उपलब्ध हैं।

लेकिन जीवन के सबसे महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर किसी सर्च इंजन पर नहीं मिलते। मैं कौन हूँ? मुझे जीवन में क्या बनना है? मेरी वास्तविक रुचि क्या है? मेरी क्षमता किस दिशा में है? मेरी सफलता का अर्थ क्या है? मैं समाज के लिए क्या कर सकता हूँ? इन प्रश्नों के उत्तर बच्चे को स्वयं खोजने होंगे। यही जीवन के उद्देश्य की खोज है। करियर जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा है, लेकिन करियर ही जीवन नहीं है। डॉक्टर, इंजीनियर, शिक्षक, वैज्ञानिक, अधिकारी या उद्यमी बनना उपलब्धि है, लेकिन एक अच्छा मनुष्य बनना उससे भी बड़ी उपलब्धि है। जीवन की सार्थकता केवल इस बात में नहीं कि हमने कितना कमाया या कितनी प्रसिद्धि प्राप्त की, बल्कि इस बात में भी है कि हमारे होने से कितने जीवन बेहतर हुए। आज सोशल मीडिया ने पहचान और सफलता के कुछ नए पैमाने बनाए हैं—कितने लाइक, कितने फॉलोअर्स, कितने व्यूज और कितनी प्रतिक्रियाएँ। लेकिन क्या मनुष्य की वास्तविक कीमत इन संख्याओं से तय हो सकती है? शायद नहीं। किसी बच्चे की आँखों में अपने शिक्षक के लिए सम्मान, माता-पिता के चेहरे पर अपने बच्चे की ईमानदारी देखकर आने वाली मुस्कान, किसी जरूरतमंद की सहायता के बाद मिलने वाली आत्मसंतुष्टि और अपने कर्तव्य को ईमानदारी से निभाने का गर्व—इनकी कोई डिजिटल संख्या नहीं होती। कुछ उपलब्धियाँ ऐसी होती हैं जिन्हें दुनिया नहीं देखती, लेकिन वे मनुष्य के भीतर जीवनभर रोशनी करती रहती हैं। इसलिए बच्चों को लाइक और फॉलोअर्स से आगे की पहचान समझानी होगी। उन्हें यह सिखाना होगा कि अपनी पहचान दूसरों की स्वीकृति से नहीं, अपने चरित्र और कर्म से बनती है। इसी तरह उन्हें तुलना के जाल से भी बचाना होगा। सोशल मीडिया पर दिखाई देने वाली जिंदगी अक्सर पूरी जिंदगी नहीं होती। वहाँ उपलब्धियाँ दिखाई देती हैं, संघर्ष नहीं; मुस्कान दिखाई देती है, चिंता नहीं; सफलता दिखाई देती है, असफलता नहीं। इसलिए किसी दूसरे की डिजिटल तस्वीर देखकर अपनी वास्तविक जिंदगी को छोटा समझना उचित नहीं। बच्चों को दूसरों से आगे निकलने की जगह स्वयं से बेहतर बनने की प्रेरणा देनी चाहिए। कल से आज थोड़ा बेहतर होना ही वास्तविक विकास है। तकनीक के इस दौर में समय का मूल्य समझना भी अत्यंत आवश्यक है। धन खोने के बाद उसे फिर कमाया जा सकता है, लेकिन बीता हुआ समय वापस नहीं आता। मोबाइल और सोशल मीडिया का आकर्षण इतना अधिक है कि कुछ मिनट कब घंटों में बदल जाते हैं, पता ही नहीं चलता।

इसलिए डिजिटल अनुशासन जीवन का आवश्यक हिस्सा बनना चाहिए। पढ़ाई के समय अनावश्यक नोटिफिकेशन से दूरी, सोने से पहले स्क्रीन का सीमित उपयोग, भोजन के समय परिवार से संवाद और दिन के कुछ समय को पूरी तरह स्क्रीन-मुक्त रखना बच्चों के जीवन में संतुलन ला सकता है। लेकिन केवल प्रतिबंध समाधान नहीं है। यदि हम बच्चों से मोबाइल दूर करेंगे, तो उसके स्थान पर सार्थक विकल्प भी देने होंगे। उन्हें खेलना होगा, पुस्तक पढ़नी होगी, संगीत और कला से जुड़ना होगा, प्रकृति के साथ समय बिताना होगा, प्रयोग करने होंगे और सामाजिक गतिविधियों में भाग लेना होगा। जब वास्तविक जीवन अर्थपूर्ण और आनंददायक होगा, तभी आभासी दुनिया का आकर्षण संतुलित होगा।

आने वाला समय तकनीक का समय है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता और नई वैज्ञानिक खोजें हमारी दुनिया को और बदलेंगी। ऐसे में बच्चों को तकनीक से काटना न संभव है, न उचित। हमें उन्हें तकनीक के साथ जीना सिखाना होगा। उन्हें यह समझाना होगा कि तकनीक जितनी शक्तिशाली है, उसका उपयोग करने वाले का विवेक उससे भी अधिक महत्वपूर्ण है। हमें ऐसी पीढ़ी चाहिए जो डिजिटल दुनिया में दक्ष हो, लेकिन वास्तविक दुनिया में संवेदनशील भी; जो इंटरनेट से जानकारी ले, लेकिन हर जानकारी को आँख बंद करके स्वीकार न करे; जो कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग करे, लेकिन अपनी मानवीय बुद्धिमत्ता और विवेक को सर्वोपरि रखे; जो आधुनिक बने, लेकिन अपनी जड़ों से न कटे; जो बड़े सपने देखे, लेकिन उन सपनों की दिशा और उद्देश्य को भी समझे। एक शिक्षक के रूप में मेरी सबसे बड़ी चिंता यह नहीं है कि बच्चे तकनीक का उपयोग कर रहे हैं। मेरी चिंता तब होती है जब तकनीक उनके जीवन का उद्देश्य तय करने लगती है। मैं चाहता हूँ कि मेरे विद्यार्थी आधुनिक ज्ञान से समृद्ध हों, लेकिन अपने संस्कारों से जुड़े रहें। वे विज्ञान सीखें, नई तकनीक अपनाएँ, अपने सपनों को पूरा करें, लेकिन अपने माता-पिता, गुरु, समाज और प्रकृति के प्रति अपनी जिम्मेदारी न भूलें। मैं चाहता हूँ कि वे मोबाइल की स्क्रीन पर नहीं, अपने कर्मों में अपनी पहचान बनाएँ। वे केवल यह न पूछें कि "मुझे क्या मिलेगा?", बल्कि कभी यह भी सोचें कि "मैं समाज को क्या दे सकता हूँ?" यही सोच शिक्षा को सार्थक बनाती है। अंततः हमें यह स्वीकार करना होगा कि तकनीक हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुकी है और आने वाले समय में उसका प्रभाव और बढ़ेगा। इसलिए हमें तकनीक से युद्ध नहीं करना, बल्कि उसके साथ विवेकपूर्ण संबंध बनाना है। हमें अपने बच्चों के हाथ से मोबाइल छीनने की बजाय उनके मन में उद्देश्य की रोशनी जलानी है। हमें उनके समय पर केवल पहरा नहीं लगाना, बल्कि उनके समय को सार्थक बनाना है। हमें उन्हें केवल आधुनिक बनाना नहीं, बल्कि मानवीय भी बनाए रखना है। हमें ऐसी पीढ़ी तैयार करनी है जिसके हाथ में तकनीक हो, लेकिन दिल में संवेदना; जिसके पास ज्ञान हो, लेकिन अहंकार न हो; जिसके सपने बड़े हों, लेकिन संस्कार उनसे भी बड़े हों; जिसकी आँखें भविष्य की ओर हों, लेकिन पैर अपनी मिट्टी में मजबूती से टिके हों। क्योंकि अंततः तकनीक मनुष्य के लिए बनी है, मनुष्य तकनीक के लिए नहीं। तकनीक हाथ में रहे, विवेक मन में रहे, संस्कार जीवन में रहें, जीवन का उद्देश्य स्पष्ट रहे और इंसानियत दिल में रहे—यही आज की शिक्षा की सबसे बड़ी आवश्यकता और आने वाली पीढ़ी के लिए हमारा सबसे बड़ा संकल्प होना चाहिए।

- धीरज सिंह

लेखक परिचय

नाम – धीरज सिंह

राजकीय शिक्षक सम्मान 2025, बिहार सरकार, शिक्षा विभाग

विज्ञान शिक्षक, मध्य विद्यालय नोनिया टोला, चकला, नरपतगंज, अररिया

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com

प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

सम्मान-पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि

आ........ **धीरज सिंह** ....जी

ने हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर आयोजित "**एक लेख प्रतियोगिता**" में उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए **समसामयिक विषय पर अपने विचारों को** प्रभावी एवं सार्थक ढंग से अभिव्यक्त किया।

उनकी साहित्यिक **अभिव्यक्ति** एवं रचनात्मक सहभागिता की सराहना करते हुए **अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन** की ओर से यह **सम्मान-पत्र** सादर प्रदान किया जाता है।

आपकी सृजनशीलता एवं साहित्यिक यात्रा के उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिन्दी विचारों को विस्तार देती है... समाज को जोड़ती है...

हिंदी
हमारी पहचान...
हमारी शक्ति...

प्रीति सुराना

समकित सुराना

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन एवं संस्था

डॉ. प्रीति समकित सुराना

शब्द से संवेदन तक... लेखन से परिवर्तन तक...